डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, फरवरी, 2021
वर्षः 04, अंक–04

सूर्य नमस्कार समस्त रोगों से लड़ने में समर्थ है : कुलपति 03

नई शिक्षा नीति में समाहित है स्वावलंबी भारत की पहचान : राज्यमंत्री 04

भारतीय गणतंत्र की पूरे विश्व में होती है सराहनाः कुलपति

27 जनवरी। 72 वें गणतंत्र दिवस पर डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज ही के दिन 1950 में हमारे देश में निर्मित अपना संविधान पूरे राष्ट्र में लागू किया गया। हमारे गणतंत्र की पूरे विश्व में सराहना होती है। हमारा गणतंत्र एक सशक्त संरचना है, हमारा संविधान एक परिपक्व राष्ट्र के रूप में है। संविधान ने देश के सभी धर्मों, जातियों, संप्रदायों को जोड़ कर रखा हुआ है। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि आज हम अपने देश के उन बहादुर सपूतों, स्वतंत्रता सेनानियों, को याद किए बिना नहीं रह सकते हैं। आज का दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, सरदार भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाषचंद्र बोस, स्वामी विवेकानंद, सरदार वल्लभभाई पटेल एवं लाल बहादुर जैसे महापुरुषों एवं स्वतंत्रता सेनानियों को शत–शत नमन करने का है। आज हम सभी के लिए गौरव का दिन है। हमारा महान देश आप सभी के कर्मठ एवं जुझारूपन के कारण आगे बढ़ रहा है। कुलपति प्रो0 रविशंकर ने कहा कि आज कोविड–19 का संक्रमण देश में धीरे–धीरे काफी कम हो गया है। देश प्रधानमंत्री के नेतृत्व में एक नहीं दो वैक्सीन का निर्माण कर चुका है। प्रधानमंत्री के विश्व शांति एवं वसुधैव कुटुंबकम के नारे की पूरे विश्व में चर्चा हो रही है। कुलपति ने कहा कि हमारे देश को इसलिए महान कहा गया है कि ऋषि–मुनियों ने जो विचार दिए हैं वे आज भी सार्वभौमिक है। कुलपति ने कहा कि हमें आगे और चुनौतियों का सामना करना है। हम सभी को मिलकर चुनौतियों को अवसर के रूप में बदलना है। कुलपति ने संबोधित करते हुए कहा कि 29 जुलाई 2020 को हमारे देश में नई शिक्षा नीति उद्घोषणा के साथ उसे लागू कर दिया गया है। अवध विश्वविद्यालय नई शिक्षा नीति को लागू करने में अग्रणी भूमिका निभाएगा। कुलपति ने बताया कि आने वाले दिनों में सरकार की तरफ से जिम्मेदारियां

बढ़ाई जा रही हैं। कुलपति ने बताया कि नई शिक्षा नीति के अनुसार नए–नए पाठ्यक्रम चलाए जाने हैं उसे आप लोगों के सहयोग से आगे बढ़ाना है। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय में नैक टीम का भ्रमण होना है। दीक्षांत समारोह भी प्रस्तावित हो चुका है। इसलिए हमें निरंतर नवीन कार्य करते रहने के साथ हर कार्य को गति प्रदान करनी है। हमें विश्वास है कि विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने में आपका सहयोग मिलता रहेगा।

कुलपति प्रो0 सिंह ने अपने संबोधन के पूर्व मुख्य परिसर, नवीन परिसर एवं कुलपति आवास पर झंडारोहण किया। मुख्य परिसर में झंडारोहण से पहले कुलपति प्रो0 सिंह ने डॉ0 लोहिया, गांधी जी, विवेकानंद, सरदार वल्लभभाई पटेल जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। उसके उपरांत विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं को शपथ दिलाई। गणतंत्र दिवस पर परिसर में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें योगोपचार विभाग की छात्र–छात्राओं द्वारा योग नृत्य, रंग दे बसंती पर सामूहिक नृत्य एवं विश्वासों के दीप जलाकर युग ने तुम्हें पुकारा, संगीत एवं अभिनय कला विभाग की छात्राओं ने इस आजादी को प्यार करो एवं वो दिन हैं कितने दूर, फैशन डिजाइनिंग एण्ड गारमेंट टेक्नोलॉजी की छात्राओं ने संदेशे आते है जैसे देश भक्ति गीतों से एवं बीपीएस के छात्र ने काव्य पाठ द्वारा सभी को भाव–विभोर कर दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 निखिल उपाध्याय द्वारा किया गया। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधिकारी धनन्जय सिंह, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 अशोक शुक्ला, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 आरके तिवारी, प्रो0 एसएस मिश्र, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 के0के वर्मा, प्रो0 एनके तिवारी, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल, प्रो0 अनूप कुमार, प्रो0 आरके सिंह, प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

योग, स्वास्थ्य–शिक्षा तथा शारीरिक क्रियाएं हमारी विरासतः प्रो0 मिश्र

07 फरवरी। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योगिक विज्ञान संस्थान द्वारा 'कोविड–19 का खेल और शारीरिक क्रियाओं पर प्रभाव' विषय पर दो दिवसीय ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, मध्य प्रदेश के कुलपति प्रो0 कपिल देव मिश्र रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता अवध विवि के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने की।

सेमिनार के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि कुलपति प्रो0 कपिल देव मिश्र ने सनातन संस्कृति का हवाला देते हुए कहा कि पुरातन काल से ही योग, स्वास्थ्य–शिक्षा तथा शारीरिक क्रियाएं हमारी विरासत रही है। कोरोना काल में यही हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई है। इसे अपने जीवन में अपनाकर कोरोना संक्रमण से निजात पाकर स्वयं को स्वस्थ्य रख सकते है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि कोविड–19 के दौर में शारीरिक क्रियाओं एवं योग का महत्व मानव समाज के कल्याण के लिए बढ़ गया है। वर्तमान समय में इसे सभी को अपनाना चाहिए। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि समाज को स्वस्थ्य रखने के लिए इस महामारी के प्रति जागरूक होना होगा, तभी हम स्वस्थ्य समाज की कल्पना कर सकते है।

संस्थान के निदेशक प्रो0 एसएस मिश्र ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि कोविड–19 ने हम सभी के जीवन को प्रभावित किया है। इससे निजात पाने के लिए योग एवं खेल को महत्व देने के साथ समाज को जागरूक करना होगा। उद्घाटन सत्र में संस्थान के डॉ0 अनिल कुमार मिश्र ने कोविड–19 महामारी के मुख्य कारणों एवं उसके निवारण के उपायों पर प्रकाश डाला।

सेमिनार के द्वितीय सत्र में लक्ष्मीबाई नेशनल इंस्टीट्यूट आफ फिजिकल एजुकेशन ग्वालियर के डॉ0 राजकुमार शर्मा ने कोरोना महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था पर जोर देते हुए कहा कि ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को अपनाकर हम अच्छी और बेहतर शिक्षा दे सकते है। सत्र में ही डॉ0 एसएन सिंह ने कोरोना काल में फिजिकल फिटनेस के बारे में जानकारी दी।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि सी.एस.आर.आई. दिल्ली के

महानिदेशक राजपाल सिंह ने कहा कि संक्रमण काल की विषम परिस्थितियों ने खेलकूद के क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं। आज जितनी आवश्यकता है उस अनुपात में हमारे पास कोच और ट्रेनर उपलब्ध नहीं है। हमें ओलंपिक और एशियाड में अधिक उपलब्धि हासिल करने के लिए खेल में संसाधन बढ़ाने के साथ–साथ शोध कार्यों को बढ़ावा देना होगा। इसके साथ फिट इण्डिया मूवमेंट को आम जन तक पहुंचाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे शारीरिक शिक्षा खेल एवं योगिक विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो0 एस.एस. मिश्र ने कहा कि हमें प्रतिदिन संयमित रहकर शारीरिक व्यायाम और योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाना होगा। इसके लिए समाज को जागरूक करने की आवश्यकता है। प्रो0 मिश्र ने सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा एवं खेल को अनिवार्य रूप से शामिल करने पर जोर दिया।

सेमिनार के द्वितीय दिन के प्रथम सत्र की शुरुआत डॉ. सत्यंत कुमार खात्यान ने कोविड–19 के बढ़ते प्रकोप के कारणों पर प्रकाश डाला। उन्होंने पर्याप्त व्यायाम की उपयोगिता पर जोर देते हुए कहा कि कोरोना की तीव्रता को कम करने के लिए पौष्टिक आहार एवं योग तथा आयुर्वेदिक पद्धति को जीवन में अपनाना नितांत जरूरी है। लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉ. नीरज जैन ने कहा कि कोरोना संक्रमण के समय से जो विषम परिस्थितियां उत्पन्न हुई हैं, इसके कारण शारीरिक क्रियाओं की उपयोगिता को बढ़ावा मिला है। इस महामारी ने हमको टीचिंग के नए–नए साधन उपलब्ध कराएं हैं।

इसी क्रम में बद्री विशाल पीजी कॉलेज फर्रुखाबाद के प्राचार्य डॉ. शरद चंद्र मिश्रा ने कहा कि खेल एक नैसर्गिक क्रिया है। इसके माध्यम से हम अपने स्वास्थ्य को सही करने के साथ–साथ बेहतर जीवन शैली को प्राप्त कर सकते हैं। सेमिनार के संयोजक डॉ0 अनिल कुमार मिश्रा ने कहा कि संक्रमण से बचाव के लिए योग के साथ शारीरिक व्यायाम आवश्यक है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मॉ सरस्वती की वंदना के साथ हुआ। उसके उपरांत विश्वविद्यालय कुलगीत की डिजीटल प्रस्तुतीकरण की गई। तकनीकी सहयोग संस्थान के डॉ0 संघर्ष सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अर्जुन सिंह ने किया। आयोजन सचिव डॉ0 अनुराग पांडे, डॉ0 त्रिलोकी यादव एवं डॉ0 मुकेश वर्मा ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर डॉ0 कपिल कुमार राणा, डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी, मोहिनी पांडे, देवेंद्र कुमार वर्मा, स्वाति उपाध्याय, अनुराग सोनी, आलोक तिवारी, गायत्री वर्मा सहित देश के अन्य विश्वविद्यालयों के शिक्षक एवं प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

आधुनिक पत्रकारिता में तकनीकी रूप से दक्ष होना जरूरी : प्रो0 श्रीवास्तव

19 जनवरी। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग में 'वर्तमान परिवेश में पत्रकारिता के व्यावहारिक पक्ष' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

व्याख्यान को संबोधित करते हुए भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के जनसंचार एवं पत्रकारिता के विभागाध्यक्ष प्रो0 गोविन्द जी पाण्डेय ने कहा कि पत्रकारिता के विद्यार्थियों को जिस भाषा की बेहतर समझ हो उसी में निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए। भाषा पर पकड़ समृद्ध लेखन की तरफ ले जाता है। प्रो0 पाण्डेय ने बताया कि थोड़े शब्दों में बहुत कुछ व्यक्त करने की कला का प्रयास करना चाहिए। यदि लेखन क्षमता विकसित होती है तो मीडिया के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ा जा सकता है। इसके लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में लखनऊ विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार के विभागाध्यक्ष प्रो0 मुकुल श्रीवास्तव ने बताया कि आधुनिक पत्रकारिता में छात्रों को तकनीकी रूप से दक्ष होना जरूरी है। विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम एक मात्र विकल्प है। उन्होंने कहा कि नियमित अभ्यास से लेखन एवं बोलने के अभ्यास से बोलने की क्षमता को समृद्ध किया जा सकता है।

कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत एवं संचालन करते हुए विभाग के समन्वयक डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने बताया कि मीडिया में स्थापित होने के लिए अपने स्किल को बढ़ाना होगा। भाषा पर पकड़ बनाने के लिए निरन्तर अध्ययन करते रहें।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मॉ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके किया गया। विभाग के शिक्षक डॉ0 आर0एन0 पाण्डेय एवं डॉ0 अनिल कुमार विश्वा द्वारा अतिथियों का स्वागत स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्रम भेंटकर किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा द्वारा किया गया। इस अवसर पर अपराजिता, अंशुमान, अंकिता, आरती, रोशनी, राधा, सुरभि, आशुतोष, शिव कुमार, शशांक, रत्नेश, सचिन, शबाना सहित अन्य छात्र–छात्राएं उपस्थित रही।

मंथन

15 फरवरी, 2021: माघ शुक्ल पक्ष, चतुर्थी, विक्रम संवत् 2077

'उस ज्ञान का कोई लाभ नहीं, जो समाज के हित में ना हो'

महानगरों में फिर पैर पसारता कोरोना

कोरोना वायरस का बढ़ता प्रकोप यही बता रहा है कि फिलहाल अभी उससे छुटकारा मिलने वाला नहीं। महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, दिल्ली जैसे राज्यों में अभी कोरोना का संक्रमण देखा जा रहा है। बीते कुछ दिनों में जिस तरह से हजारों की संख्या में कोरोना के नए मरीज प्रतिदिन मिल रहे हैं और मामलों की संख्या आश्चर्यजनक तरीके से बढ़ रही है। महाराष्ट्र के कई जिलों में पुनः लॉक डाउन की स्थिति बन रही है। राज्य सरकारों को विवशता में यह कदम उठाना पड़ रहा है। भारत में अधिक आबादी होने के कारण यह चुनौती और भी ज्यादा है। भारत में वैक्सीनेशन की प्रक्रिया का प्रथम चरण की पूर्ण हो गया है। विश्व भर में वैक्सीनेशन बड़े पैमाने पर चलाया जा रहा है।

भारत भी उन्हीं अग्रणी देशों में वैक्सीनेशन पर कार्य कर रहा है। इससे यह तो आशा बन रही है कि शीघ्र ही बड़े स्तर पर वैक्सीन लगने से राहत तो मिलेगी, लेकिन सावधानी बहुत आवश्यक है। वैक्सीन के साथ सावधानी एक महत्वपूर्ण विकल्प है। उत्तर प्रदेश में शिक्षण संस्थानों के खुलने से यह आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक स्तर पर सावधानी रखी जाए। कोरोना को तो हारना ही है, लेकिन कोशिश यह होनी चाहिए कि उस पर जल्द काबू पाया जाए। यह कोशिश केवल केंद्र और राज्यों के साथ उनकी विभिन्न् एजेंसियों को ही नहीं करनी, बल्कि आम जनता को भी करनी है।

निःसंदेह कोरोना से डरने की जरूरत नहीं, लेकिन इसका यह भी मतलब नहीं कि आवश्यक सावधानी का परिचय देने से इन्कार किया जाए। चूंकि ऐसा किया जा रहा है, इसलिए कोरोना काबू में आता नहीं दिखता। समझना कठिन है कि लोगों को मास्क का सही इस्तेमाल करने में क्या परेशानी है? यह संतोष की बात अवश्य है कि कोरोना मरीज तेजी से ठीक हो रहे हैं और मृत्यु दर में गिरावट जारी है, लेकिन आखिर इसकी अनदेखी क्यों की जा रही है कि डेढ़ लाख से अधिक लोग काल के गाल में समा गए हैं और इनमें वे भी हैं जिन्हें कोई गंभीर बीमारी नहीं थी। अच्छा हो कि लोग यह समझें कि यदि उनकी ओर से अपेक्षित सावधानी नहीं बरती गई तो कोरोना पर लगाम लगाने की कोशिशों पर पानी ही फिरेगा।

स्वछता अभियान के जनक हैं संत गाडगे

रत्नेश उपाध्याय

भारत का इतिहास महापुरुषों, समाज सुधारको व क्रांतिकारियों से भरा हुआ है। भारतीय समाज में कई ऐसे समाज सुधारक व संत हुए, जिनके बारे में अधिकतर लोग आज भी अनजान है। इन्हीं संतो में एक महान व्यक्तित्व व समाज सुधारको में संत गाडगे बाबा का नाम प्रमुख है। इनका जन्म 23 फरवरी 1876 को महाराष्ट्र के अमरावती जिले में एक धोबी परिवार में हुआ। इनका वास्तविक नाम डेबुजी झिंगराजी जानोरवर था। गाडके बाबा एक समाज सुधारक और भिक्षुक थे। इन्होंने महाराष्ट्र में अनेक धर्मशालाएं, गौशालायें, विद्यालय, चिकित्सालय तथा छात्रावासों का निर्माण करवाया। यह सब इन्होंने भीख मांग कर व अपनी कमाई से किया। लेकिन इन्होंने अपने लिए एक कुटिया तक नहीं बनवाई, यही उनकी महानता का परिचय है।

गाडगे बाबा ने जीवन का लक्ष्य समाज सेवा को माना। उन्होंने हमेशा दीन–दुखियों व वंचितों की सेवा को ही ईश्वर भक्ति माना। धार्मिक आडंबरो का खुलकर विरोध किया। इनका मानना था, ईश्वर मंदिर व मूर्तियों की जगह केवल मानव समाज में होता है। गाडगे बाबा का मानना था, भूखों को भोजन, प्यासे को पानी, नंगे को वस्त्र, अनपढ़ को शिक्षा और बेरोजगार को काम देना ही भगवान की सच्ची सेवा होती है।

गाडगे बाबा अनपढ़ होते हुए भी, समाज को सुधारने में क्रांतिदूत की भूमिका निभाई। उन्होंने अंधविश्वासों, बाह्य आडंबरो, रूढ़ियों और सामाजिक कुरीतियों से समाज को होने वाले नुकसान को नजदीक से देखा और इसका खुलकर विरोध किया। तीर्थों में होने वाले पाखंड व भ्रष्टाचार का खुलकर विरोध किया। धर्म के नाम पर होने वाली पशुबलि कि निंदा की। समाज में प्रचलित छुआछूत और नशाखोरी जैसी सामाजिक कुरीतियों तथा मजदूरों व किसानों के शोषण का विरोध किया।

गाडगे बाबा स्वच्छता के वास्तविक अग्रदूत माने जाते हैं। गाडगे बाबा जब किसी गांव में जाते तो सबसे पहले गटर और रास्तों को साफ करने लगते। काम समाप्त होने पर खुद लोगों को बधाई देते। इन कार्यों से मिले पैसों का प्रयोग वे सामाजिक विकास, विद्यालय, अस्पताल और धर्मशाला बनवाने में करते।

गाडगे बाबा गांव की सफाई करने के बाद शाम को कीर्तन का आयोजन करते हैं और कीर्तन के माध्यम से ही लोगों में जनकल्याण की भावना पैदा करते। गाडगे बाबा ने लोगों को कठिन परिश्रम, सादा जीवन और परोपकार की भावना का पाठ पढ़ाया और हमेशा जरूरतमंदों की सहायता करने को कहते थे। गाडगे बाबा ने 12 धर्मशालाएं स्थापित की ताकि गरीबों को रहने की मुफ्त व्यवस्था हो सके, साथ ही अंधे तथा अन्य दिव्यांगों के रहने की व्यवस्था हो सके।

23 फरवरी को संत गाडगे जी की 145 वी जयंती को , ''स्वच्छता संकल्प दिवस'' के रूप में मनाया गया। संत गाडगे बाबा वास्तव में ''स्वच्छ भारत मिशन'' के सच्चे ब्रांड अंबेसडर थे। गाडसे बाबा महाराष्ट्र के प्रसिद्ध समाज सुधारकों में से एक थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन लोगों के कल्याण और जरूरतमंदों की सेवा के लिए समर्पण कर दिया। ऐसे समाज सुधारक के सम्मान में भारत सरकार ने कई पुरस्कार दिए हैं और अमरावती विश्वविद्यालय का नाम बदलकर संत गाडगे बाबा अमरावती, विद्यापीठ रखा गया है।

संत गाडगे बाबा भारतीय समाज के महान संत थे। संत गाडगे बाबा का निधन 20 दिसंबर 1956 को हुआ। आज आधुनिक समाज में जब भारत में जिस तरह समाज में भेदभाव बढ़ है और धार्मिक आडंबर बढ़ रहा है, तब समाज के कल्याण के लिए संत गाडगे बाबा की विचारधारा अधिक प्रासंगिक हो जाती है। आज हम लोगों को भी सामाजिक भेदभाव को दूर कर अपने जीवन में संत गाडगे बाबा की विचारधारा को अपनाना होगा। एक समृद्ध और संगठित भारत के विकास के लिए संत गाडगे बाबा की विचारधारा को मूर्त रूप देने की आवश्यकता है, तभी सही मायने में इस संत के प्रति हम अपना सम्मान व्यक्त कर सकते हैं।

रमन प्रभाव ने दी है विज्ञान को नई दिशा

रोशनी कुमारी

आज से कई वर्ष पूर्व 28 फरवरी के दिन भारतीय वैज्ञानिक डॉ चंद्रशेखर वेंकटरमन के द्वारा रमन प्रभाव की खोज की गई थी। इस दिन को यादगार बनाने के लिए डॉ0 सी0 वी0 रमन की याद में सन् 1986 से प्रति वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने की घोषणा की गई और तब से लेकर अब तक 28 फरवरी को हम राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाते आ रहे हैं।

डॉ सीवी रमन पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने भारत में कई शोध कार्य किया। उन्होंने सन् 1907 से लेकर 1933 तक इंडियन एसोसिएशन ऑफ द कल्टीवेशन आफ साइंस कोलकाता पश्चिम बंगाल में काम किया था। जिसमें उनकी रमन प्रभाव नामक खोज एक विशेष खोज बन गई। दरअसल 1921 में जब सी0 वी0 रमन एक समुद्री जहाज पर सवार होकर अपने घर जा रहे थे तब उनके मन में एक सवाल आया कि समुंद्र का रंग नीला क्यों है। तब उनका ध्यान इंग्लैंड के मशहूर वैज्ञानिक जॉन विलियम की बातों पर गया। जॉन विलियम ये मानते थे कि आकाश की वजह से समुंद्र का रंग नीला होता है, लेकिन सीवी रमन इस बात से सहमत नहीं थे। कई सवालों को मन में लिए रमन कोलकाता पहुंचे। सन् 1923 में कुछ समान उपकरण की मदद से उन्होंने समुद्र और आकाश पर अनेक अध्ययन किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि समुंद्र भी सूर्य के प्रकाश को विभाजित करता है, जिससे समुंद्र के पानी का रंग नीला दिखाई पड़ता है। रमन और उनके छात्रों ने प्रकाश के कई रंगों में बाटने पर शोध किया और जिस नतीजे पर पहुंचे उसे रमन प्रभाव कहा जाने लगा।

रमन की यह खोज 28 फरवरी 1930 को प्रकाश में आई इसीलिए इस खोज के सम्मान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाने लगा। 1930 में रमन को भौतिकी के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वे एशिया के पहले वैज्ञानिक थे जिन्होंने रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी बनाया। आज कई रासायनिक प्रयोगशालाओं में रमन स्पैक्ट्रोस्कोपी का उपयोग किया जाता है। चांद पर पानी का पता लगाने के लिए भी सपेक्ट्रोस्कोपी का योगदान रहा। इस तरह से एक ही सवाल के जवाब ने विज्ञान को एक नई दिशा दे दी।

रमन प्रभाव की खोज भारतीय भौतिक शास्त्री डॉ सी0 वी0 रमन द्वारा दुनिया को दिया गया विशिष्ट उपहार है। सी0 वी0 रमन एक ऐसे महान आविष्कारक रहे जो न सिर्फ भारतीयों के लिए बल्कि दुनिया भर के लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत बन गए।

श्रव्य माध्यम का अनुपम उपहार है रेडियो

हर्षित कुशवाहा

सारी दुनिया के रेडियो प्रसारकों, स्टेशनों और श्रोताओं को एक ही मंच पर लाने के लिए मनाया जाता है विश्व रेडियो दिवस।

प्रति वर्ष 13 फरवरी रेडियो दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन रेडियो के इतिहास की याद दिलाता है। सबसे पहले रेडियो का प्रसारण 24 दिसंबर 1906 को कनाडाई वैज्ञानिक रेगिनाल्ड फेसेंडेन के अगुवाई में हुआ। लेकिन वर्ष 1900 में ही भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु ने रेडियो पर परीक्षण की शुरुआत कर दी थी।

दुनिया का पहला रेडियो स्टेशन ली द फोरेस्ट ने न्यूयॉर्क में 1918 में शुरु किया था। भारत में रेडियो का इतिहास लगभग एक सदी पुराना है। भारत में 1927 तक ढेरों रेडियो क्लबों की स्थापना हो चुकी थी लेकिन उससे पहले भी अनाधिकृत रुप से बंबई, कलकत्ता, लाहौर और मद्रास में रेडियो प्रसारण किया जा रहा था। वर्ष 1936 में इम्पोरियल रेडियो ऑफ इंडिया की शुरुआत हुई जो आगे चलकर ऑल इंडिया रेडियो के नाम प्रख्यात हुआ।

रेडियो दिवस मनाये जाने का श्रेय यूनेस्को को जाता है। विश्व रेडियो दिवस मनाने के पीछे यूनेस्को का यह उद्देश्य था कि दुनिया के प्रमुख रेडियो प्रसारकों, स्थानीय रेडियो स्टेशनों और सारी दुनिया के रेडियो–श्रोताओं को एक ही मंच पर लाया जा सके। विश्वस्तर पर रेडियो दिवस मनाने का फैसला युनेस्को द्व ारा 2011 में लिया गया और यह तय हुआ कि 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस मनाया जाएगा।

रेडियो मनोरंजन का बहु प्रचलित साधन है इसकी एक वजह यह भी है कि यह एक सस्ता उपकरण है। रेडियो साहित्यिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, समाजिक, युवा, बाल एवं महिला तथा कृषि एवं पर्यावरण संबंधी प्रस्तुतियों के लिए बहुत खास है, लेकिन समय के साथ टेलीविजन के आ जाने से रेडियों के स्रोताओं की संख्या में कमी हुई। हॉलाकि, रेडियो के एफएम रूप ने श्रोताओं को बांधे रखा।

रेडियो का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि जिन लोगों को पढ़ना–लिखना नहीं आता, वह भी रेडियो सुनकर सारी जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं। रेडियो लोगों को सावधान, सतर्क, जागरूक और शिक्षित भी करता है। आज हर शहर में नए–नए एफएम चैनल चल रहे हैं, पर भविष्य में पॉडकास्ट रेडियो की जगह ले सकता है।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति, विश्वविद्यालय परिसर की गतिविधियों का दस्तावेज है। नेता जी सुभाष चंद्र बोस, मकर संक्रांति व गणतंत्र दिवस विषय पर लेख बहुत ही सामयिक एवं तथ्यपरक रहे।

– वीरेन्द्र प्रताप सिंह

सुविचार

आजादी का संरक्षण अकेले सैनिकों का काम नहीं है। पूरे देश को मजबूत होना है।

– लाल बहादुर शास्त्री

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
अभिषेक, शशांक, हिमांशी

Feedback
avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रका'न पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध वि'वविद्यालय, अयोध्या।

अयोध्या में बढ़ी पर्यटन की संभावनाएं : जिलाधिकारी

15 जनवरी। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में विश्वविद्यालय व नगर निगम के मध्य 15 दिन का टूरिस्ट गाइड प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारम्भ पर मुख्य अतिथि जिलाधिकारी अनुज कुमार झा ने अयोध्या की सभ्यता और यहां के निवासियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि माननीय सुप्रीम कोर्ट के राम मंदिर पर निर्णय आने के बाद से अयोध्या में यात्रियों की संख्या में व्यापक वृद्धि हुई है। इसी कारण यहां टूरिस्ट गाइडों की आवश्यकता देखी जा रही है। जिलाधिकारी ने बताया कि नव्य अयोध्या आने वाले समय में पूरा बदला हुआ परिदृश्य दिखाई देगा। शासन एवं प्रशासन इसकी पूरी तैयारी कर रहा है। उन्होंने बताया कि अयोध्या में भव्य रेलवे स्टेशन, रिंग रोड, इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर कार्य शीघ्रता से किया जा रहा है। इसी वर्ष से अयोध्या में राष्ट्रीय उड़ानें शुरू हो जाएगी। जिलाधिकारी ने टूरिस्ट गाइडों को संबोधित करते हुए कहा कि 15 दिन में प्रशिक्षण समय पूरा हो जायेगा, लेकिन सीखना निरन्तर चलता रहता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि अयोध्या एक प्राचीन धार्मिक नगरी है, यहां पर लाखों दर्शनार्थी प्रतिवर्ष भारत के विभिन्न प्रातों से आते है। लेकिन तीर्थयात्रियों को आधी अधूरी जानकारी ही मिल पाती है, इसी वजह से अयोध्या में टूरिस्ट गाइड की जरूरत है। कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि टूरिस्ट गाइड किसी भी टूरिस्ट स्थान का रीढ़ होता है, यदि वह सक्षम नहीं है, तो पर्यटन स्थल कमजोर हो जायेगा।

टूरिस्ट गाइड को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि अयोध्या अब एक विश्वव्यापी पर्यटक स्थल बन रहा है, इसलिए अब अयोध्या में टूरिस्ट की भूमिका महत्वूपर्ण होने जा रही है। अयोध्या एक हिन्दू धार्मिक स्थल ही नहीं बल्कि प्रमुख धर्मों की आस्था का प्रमुख केन्द्र है। कुलपति ने कहा कि कम्यूनिकेशन स्किल पर ध्यान देना आवश्यक है, जिस भाषा में संवाद किया जा रहा है, उसमें पूर्ण विश्वास दिखना चाहिए। गाइड का कार्य सिर्फ भाषण देना नहीं होता उसे ऐतिहासिक परिदृश्य के बारे में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए और संवाद में वे दृश्य परिलक्षित होने चाहिए।

विशिष्ट अतिथि नगर आयुक्त विशाल सिंह ने बताया कि अवध क्षेत्र में 84 कोस में 208 पौराणिक स्थलों का समेटे हुए है। यहां की सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत सदियों से संचेतना का केन्द्र बनी हुई है। उन्होंने बताया कि वाराणसी में मंठ मन्दिरों से जुड़े पुजारीगण यात्रियों को गाइड करते थे, अब उन्हें प्रशिक्षित कर तीर्थ पुरोहित नाम दिया गया है। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण पूर्ण करने के उपरांत उनको नगर निगम द्वारा प्रमाण पत्र दिया जाएगा। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी आर0पी0 यादव ने बताया कि अयोध्या में टूरिस्ट गाइड प्रशिक्षण एक स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम है। इस प्रशिक्षण के जरिए आंगतुकों को अयोध्या के परिवेश एवं आस–पास की धरोहरों से परिचित करा सके यही उद्देश्य है। इसी के क्रम में प्रक्षिणार्थियों को कई भाषाओं में ट्रेनिंग दी जा रही है।

व्यवसाय प्रबंध एवं उद्यमिता विभागाध्यक्ष प्रो0 अशोक शुक्ला ने बताया अयोध्या में टूरिज्म बढ़ने की संभावना बढ़ गई है, यात्रियों की सुविधा और मार्गदर्शन के लिए टूरिस्ट गाइडों को 50–50 की संख्या में प्रशिक्षित किया जाएगा। आज से इसका प्रथम चरण शुरू हो गया है। विभाग के डॉ0 राणा रोहित सिंह ने अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालक प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने किया।

इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 आर के सिंह, प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 एनके तिवारी, डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव, डॉ0 दिवाकर त्रिपाठी, डॉ0 मनीष सिंह, डॉ0 श्रीश अस्थाना, डॉ0 महेन्द्र पाल सिंह, डॉ0 निमिष मिश्र, डॉ0 अंशुमान पाठक, डॉ0 आशुतोष पाण्डेय, डॉ0 दीपा सिंह, डॉ0 अनीता मिश्रा, डॉ0 रामजी, डॉ0 सूरज सिंह, डॉ0 विवेक उपाध्याय, नवनीत श्रीवास्तव, जुलियस कुमार, प्रवीण राय, कपिलदेव, अनुराग तिवारी, संदीप पाण्डेय, आशीष पटेल, कविता श्रीवास्तव सहित बड़ी संख्या में प्रतिभागी उपस्थित रहे।

अनुशासन एवं परिश्रम से लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित : डॉ0 चतुर्वेदी

25 जनवरी। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग में चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों के सम्मान में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। विदाई समारोह का तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। समारोह में विभाग के बी0 वॉक0 एवं एम0ए0 एमसीजे के विद्यार्थी शामिल रहे। विदाई समारोह में मिस एमसीजे साक्षी श्रीवास्तव एवं मिस्टर सौरभ सिंह को चुना गया। वही अंतिम वर्ष के छात्र रजनीश पाण्डेय को मिस्टर स्माइली एवं शुभेन्द्र राम सिंह को मिस्टर हैण्डसम से नवाजा गया।

इन सभी प्रतिभागियों का चुनाव डांस, ग्रुप डांस, फैशन शो, कैटवॉक, कविता एवं देशभक्ति गीतों का आयोजन किया गया। समारोह में अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों ने अपने 2 वर्ष के अनुभव को जूनियर के छात्रों के साथ साझा किया और कहा कि लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कड़ी मे. हनत की जरूरत है।

विदाई समारोह में विभाग के समन्वयक डॉ विजयेन्दु चतुर्वेदी ने कहा कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए अनुशासन का बड़ा ही महत्व है। अनुशासन एवं परिश्रम से लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित है। डॉ0 चतुर्वेदी ने छात्रों से कहा कि पिछले दो वर्षों में आपने जो विभाग से सैद्धातिंक एवं व्यवहारिक ज्ञान के रूप में अर्जित किया है उसे एक स्वस्थ्य परपंरा के रूप में समाज को देना है। इसके साथ ही अपने आप को स्थापित करते हुए पुरातन छात्र के रूप में विश्वविद्यालय का गौरव बने।

विभाग के शिक्षक डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि विदाई समारोह विद्यार्थियों के साथ–साथ शिक्षकों के लिए भी बहुत ही भावुक पल होता है। संस्थान एवं शिक्षकों की पहचान विद्यार्थियों से ही होती है। अब वक्त आ गया है कि पाठ्यक्रम पूरा कर चुके विद्यार्थी सत्य निष्ठा एवं ईमानदारी से कर्तव्यों का पालन करते हुए जन–जन की आवाज बने।

कार्यक्रम में डॉ0 राज नारायण पाण्डेय ने कहा कि पत्रकारिता का कार्य माननीय एवं सामाजिक मूल्यों का संरक्षण करना है। सामाजिक सरोकारों का जन प्रतिनिधि बनकर मानव सेवा पत्रकारिता का प्रमुख लक्ष्य है। पत्रकारिता के क्षेत्र में नित नई चुनौतियों का सामना कर समन्वय स्थापित करना होगा। इसी क्रम में डॉ0 अनिल कुमार विश्वा ने कहा कि पत्रकारिता के क्षेत्र में आप सभी के कैरियर की शुरुआत हो गई है। इसके लिए आप सभी को तकनीकी एवं व्यवसायिक रूप से अपग्रेड रहना होगा।

कार्यक्रम का संचालन स्वाति खरे, आरती तिवारी एवं ईशिता श्रीवास्तव ने किया। विदाई समारोह में आशुतोष श्रीवास्तव, कुमकुम, सिंद्धांत सिंह, प्रांजली अस्थाना, अंकिता श्रीवास्तव, अखण्ड प्रताप सिंह, महेश कुमार, रत्नेश उपाध्याय, सोनू कुमार, राजेन्द्र कुमार, अंकित कुमार सहित विभाग के छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

सूर्य नमस्कार समस्त रोगों से लड़ने में समर्थ है : कुलपति

29 जनवरी। डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के योग विज्ञान विभाग, शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योगिक विज्ञान संस्थान द्वारा सर्वरोग निवारणार्थ सामूहिक 51 सूर्य नमस्कार के अभ्यास का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर ने बताया कि आज के व्यस्ततम दिनचर्या में स्वास्थ्य को ठीक बनाये रखने में योग की भूमिका बढ़ गई है। ऋषियों द्वारा बताये गये सूर्य नमस्कार का अभ्यास समस्त रोगों से लड़ने में समर्थ है। यह प्रभावकारी आसनों का सम्मिश्रण है, जो शरीर की जीवनीशक्ति बनाये रखता है। जिस प्रकार एक सामान्य व्यक्ति के जीवन में भोजन का विशेष महत्व है वैसे ही एक अच्छे स्वास्थ्य को बनाये रखने में सूर्य नमस्कार अपनी विशेष भूमिका रखता है।

कार्यक्रम में स्वामी महेश योगी जी ने सूर्य नमस्कार एवं ध्यान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उसके सैद्धांतिक और व्यवहारिक पक्षों को बताया। उन्होंने बताया कि योगियों ने अपनी तप, साधना के बल पर योग जैसे दुर्लभ ज्ञान को सामान्य मनुष्यों के लिए सुलभ कराया। शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योगिक विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो0 एस0 एस0 मिश्र ने कहा कि नियमित योग के साथ–साथ अपने जीवन लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रविशंकर सिंह एवं स्वामी महेश योगी ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन के साथ किया। कार्यक्रम का संचालन अनुराग सोनी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योगिक विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो0 एस0 एस0 मिश्र द्वारा किया।

कार्यक्रम की आयोजन समिति में डॉ. आलोक तिवारी, डॉ. गायत्री वर्मा, दिवाकर पाण्डेय की विशेष भूमिका रही। इस अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. नीलम पाठक सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक डॉ. अर्जुन सिंह, डॉ. अनुराग पाण्डेय, डॉ. त्रिलोकी यादव, डॉ. मुकेश वर्मा, डॉ. गया प्रसाद तिवारी व कर्मचारी संजय चौरसिया ने सूर्य नमस्कार अभ्यास में प्रतिभाग किया।

शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने स्वैच्छिक श्रमदान में लिया हिस्सा

24 जनवरी। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के दिशा–निर्देशन में नैक मूल्यांकन के दृष्टिगत प्रातः 10 बजे से 12 तक परिसर के विभिन्न विभागों में स्वैच्छिक श्रमदान एवं साफ–सफाई किया गया। इस अभियान में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। इस अभियान में कुलपति कार्यालय, प्रशासनिक भवन में लेखा विभाग, परीक्षा विभाग, गोपनीय, सम्बद्धता विभाग, अभियत्रंण विभाग, उपाधि विभाग, प्रशासनिक विभाग एवं ईडीपी सेल में अधिकारियों, प्रभारियों एवं कर्मचारियों ने अपने–अपने परिसर की साफ–सफाई कर श्रमदान किया। स्वैच्छिक श्रमदान के प्रति कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय में नैक की टीम मार्च के प्रथम सप्ताह में आनी है। इसी के दृष्टिगत परिसर एवं विभागों को साफ सुथरा बनाये रखने के लिए इस मुहिम को चलाया जा रहा है।

इस मुहिम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी अपना स्वैच्छिक श्रमदान कर रहे है। स्वच्छता प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में जन्म से ही दिनचर्या के रूप में है। यह जरूरी नहीं है कि व्यक्ति सिर्फ अपने घरों तक सीमित रखे। जहां से जुड़े है उसके आस–पास भी स्वच्छता के प्रति जागरूक रहना चाहिए। इससे समाज को एक साकारात्मक संदेश जायेगा। इस अभियान में विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक एवं कर्मचारी शामिल रहे।

नेता जी के देश प्रेम को भुलाया नहीं जा सकताः प्रो0 तिवारी

24 जनवरी। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में पराक्रम दिवस पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की 125वीं जयंती मनाई गई।

इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो0 एन0 के0 तिवारी ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस की इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प के विषय में छात्र–छात्राओं को विस्तार से बताया। नेताजी हमेशा सामाजिक समरसता की बात करते थे, उन्होंने कभी भी असमानता की बात नहीं की, उनके देश प्रेम को भुलाया नहीं जा सकता।

प्रो0 तिवारी ने कहा कि नेता जी अनुशासन प्रिय थे, जो संकल्प ले लेते थे उसे लक्ष्य तक पहुँचाने की क्षमता रखते थे। इसलिए सुभाषचंद्र बोस के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए छात्रों को प्रेरित किया।

विभाग के शिक्षक डॉ0 दिवाकर त्रिपाठी ने बताया कि नेताजी एक ऐसी विचारधारा के व्यक्ति थे जिन्होंने देश के हर नागरिक को एकता के सूत्र में बांध दिया है। इसके साथ ही उन्होंने सभी को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में एम. ए. उत्तरार्ध की छात्रा रंजना मौर्या ने नेताजी के जीवन के विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। उत्तरा अवस्थी ने नेताजी और शहीदों को याद करते हुए देश भक्ति गीत "ए मेरे वतन के लोगों" की प्रस्तुति दी। इसके साथ ही आनंद दुबे, नेहा यादव, रंजीत वर्मा, ऋषभ कुमार श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार, राजवीर, विनय कुमार सिंह ने भी नेताजी पर अपने विचार प्रस्तुत किए। मंच का संचालन पीएचडी शोधार्थी अनुराग मिश्रा और रविन्द्र यादव ने किया।

बालिकाओं के जीवन में मां की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण : डॉ0 शिप्रा

25 जनवरी। प्रदेश सरकार द्वारा संचालित मिशन शक्ति अभियान के तहत अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल इंपॉर्टेंस ऑफ एडोलिसेंट गर्ल्स विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबीनार की मुख्य वक्ता डॉ0 शिप्रा कटियार, एसोसिएट प्रोफेसर, आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज फतेहगढ़ रही।

डॉ0 शिप्रा कटियार ने कहा कि बालिकाओं को किशोरावस्था में मासिक चक्र का आना उनके जीवन का अभिन्न अंग है, यह उनके स्वस्थ होने की निशानी है। उन्होंने कहा कि रजः स्त्राव के दौरान घी, चावल, खीर एवं जौव का सेवन करने से इस दौरान होने वाली परेशानियों से निजात मिल सकती है। उन्होंने कहा कि बालिकाएं अपने जीवन में कई भूमिका निर्वहन करती हैं जिसमें मां की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। इसलिए बालिकाओं का स्वस्थ होना बहुत जरूरी है। इसलिए उन्हें अपने जीवन में संतुलित आहार एवं योग पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

सेल की सह समन्वयक डॉ0 सिंधु सिंह ने बताया कि मिशन शक्ति अभियान के तहत श्रृंखलाबद्ध वेबीनार का आयोजन विश्वविद्यालय में किया जा रहा है। इसमें विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं को उनकी सुरक्षा एवं आत्मसम्मान के प्रति जागरूक किया जा रहा है। यह वेबिनार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के दिशा निर्देशन में हो रहा है। वेबिनार की अध्यक्षता कर रही सेल के समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने अभिभावकों और छात्रों को महिला और बालिका सुरक्षा शपथ दिलाई। वेबिनार का संचालन सेल के सदस्य डॉ0 सरिता द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी, डॉ0 महिमा चौरसिया, मनीषा यादव, , श्रीमती नीलम मिश्रा, वल्लभी तिवारी सहित बड़ी संख्या में शिक्षक और प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

•कौटिल्य प्रशासनिक भवन में दिनांक 12 फरवरी, 2021 को नैक टीम के भ्रमण एवं 25 वें दीक्षांत समारोह की तैयारियों के सम्बन्ध में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बैठक की ।

•संत कबीर सभागार में दिनांक 23 जनवरी, 2021 को जीव विज्ञान विभाग तथा पृथ्वी एवं पर्यावरण संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में ''समाज के लिए विज्ञान'' विषय पर एक दिवसीय कांफ्रेस का आयोजन किया गया।

•कौटिल्य प्रशासनिक भवन में दिनांक 24 जनवरी, 2021 को व्यवसाय प्रबंध एवं उद्यमिता विभाग एवं ट्रैवल एजेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के बीच अनुबंध किया गया।

•संत कबीर सभागार में दिनांक 27 जनवरी, 2021 को बीएससी पाठ्यक्रम के अंतर्गत नवागंतुक स्नातक शिक्षार्थियों के लिए उन्मु–खीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

•डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देशन में 21 फरवरी, 2021 को अवध विश्वविद्यालय राज्यस्तरीय अयोध्या हॉफ मैराथन कराएगा।

•दिनांक 25 जनवरी, 2021 को भारतीय पर्यटन दिवस के अवसर पर व्यवसाय प्रबन्ध एवं उद्यमिता विभाग द्वारा अयोध्या के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों का हेरिटेज वाक का आयोजन किया गया।

नैक मूल्यांकन के संदर्भ में कुलपति ने किया छात्रों से संवाद

09 फरवरी। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानन्द सभागार में सायं 3:30 बजे मार्च माह के प्रथम सप्ताह में होने वाले नैक मूल्यांकन के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने परिसर के स्नातक छात्र–छात्राओं से सीधा संवाद स्थापित किया।

कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने छात्रों से संवाद स्थापित करते हुए बताया कि विद्यार्थी जीवन का मुख्य उद्देश्य अध्ययन करना होता है और नकारात्मकता से स्वयं को दूर करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ न कुछ समस्याएं अवश्य होती हैं उन्हीं समस्याओं के बीच आपको अपनी सफलता के लिए संघर्ष करना होता है। जीवन में नकारात्मक पक्षों से दूर रहकर सफलता प्राप्त की जा सकती है। कुलपति ने परिसर में अध्ययनरत विद्यार्थियों से उनके अध्ययन के दौरान होने वाली कठिनाइयों पर चर्चा की। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि शीघ्र ही छात्रों की समस्याओं का निराकरण कर उन्हें बेहतर परिवेश प्रदान किया जाएगा। उच्च गुणवत्ता का परिवेश तैयार करने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन प्रतिबद्ध है। कुलपति ने नैक मूल्याकंन के दृष्टिगत परिसर की शिक्षण व्यवस्था, शोध गतिविधियों, पुस्तकालय सहित कई वांछित सूचनाओं पर विस्तृत चर्चा कर बताया कि परिसर के विद्यार्थियों से नैक सीधे तौर पर एसएमएस एवं ई–मेल के जरिये सूचना प्राप्त कर रहा है। विश्वविद्यालय ने नैक मूल्यांकन के लिए अपनी तैयारियां लगभग पूरी कर ली है और अपने आवश्यक संसाधनों को अपग्रेड करने की दिशा में अग्रसर है।

कार्यक्रम में परिसर नैक सेल के समन्वयक प्रो0 फारुख जमाल ने छात्रों को बताया कि विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए आधुनिक उपकरणों के साथ व्यवस्थाएं प्रदान की जा रही है। पेयजल, पुस्तकालय, कैंटीन जैसी सुविधाओं के लिए शीघ्र ही विश्वविद्यालय में और बेहतर प्रबंधन के साथ सुविधाएं उपलब्ध होंगी। विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने छात्रों के परीक्षाफल के संदर्भ में बताया कि विश्वविद्यालय शीघ्र ही परीक्षाफल घोषित कर देगा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने कहा कि छात्रों की छात्रवृत्ति संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए कार्य किया जा रहा है। कार्यक्रम का संचालन प्रो0 नीलम पाठक ने किया।

इस अवसर पर प्रो0 हिमांशु शेखर, प्रो0 आरके सिंह, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 शैलेंद्र वर्मा, प्रो0 रमापति मिश्रा, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, इंजीनियर शिक्षा जैन, डॉ0 त्रिलोकी यादव, डॉ0 कपिल राणा, डॉ0 अनुराग पांडे, अनुराग सिंह, डॉ0 निमिष मिश्र, शाम्भवी शुक्ला,डॉ0 महेंद्र पाल, डॉ0 अनिल मिश्र, डॉ0 विनय कुमार मिश्र, डॉ0 श्रीश आस्थाना, डॉ0 आरएन पाण्डेय, संजीत पांडे, डॉ0 अनिल कुमार विश्वा, डॉ0 आशुतोष पाण्डेय, अशीष पटेल सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं छात्र उपस्थित रहे।

खेल में अनुशासन और प्रतिबद्धता जरूरी : कुलपति

02 फरवरी,। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में अंतर विभागीय खेलकूद प्रतियोगिता 2021 का शुभारंभ विश्वविद्यालय के पद्मश्री अरुणिमा सिन्हा एमिनिटी सेंटर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने खिलाड़ियों का परिचय प्राप्त कर उन्हें संबोधित करते हुए कहा कि खेल जीवन में अनुशासन और प्रतिबद्धता का निर्माण करता है। खेल से जीवन में चरित्र निर्माण को बल मिलता है। शारीरिक विकास के साथ मानसिक विकास में भी खेल का महत्वपूर्ण योगदान है। एक अच्छी शिक्षा में खेल का बहुत महत्व है।

क्रीडा प्रभारी मुकेश वर्मा ने बताया कि खेलकूद प्रतियोगिता में कुल 22 खेलों का आयोजन किया गया है। इसमें लगभग 11 सौ से अधिक प्रतिभागियों ने विभिन्न खेलों में पंजीयन कराया है। पंजीकृत प्रतिभागियों में 80 पुरुष एवं 20 महिला प्रतिभागी है। इनमें प्रमुख रूप से एकल बैडमिंटन प्रतियोगिता में 356, कैरम में 184, चेस्ट में 176, शूटिंग में 171। टीम के खेलों में क्रिकेट के तहत 522, कबड्डी में 315, वालीबाल में 234, टग ऑफ वार में 219 प्रतिभागियो। ने पंजीयन कराया।

खेल प्रतियोगिता में कुलपति ब्रिगेड एवं कुलसचिव ब्रिगेड में शिक्षकों एवं अधिकारियों कर्मचारियों के द्वारा प्रतिभाग किया जाएगा। उदघाटन सत्र में टेबल–टेनिस में सुजीत कुमार को पहला स्थान एवं बाल कृष्ण यादव को दूसरा स्थान, महिला वर्ग में शिखा पाल प्रथम, रेहाना बानो को दूसरा स्थान। योग प्रतियोगिता के बालक वर्ग में अश्विनी कुमार पहले और दीपेश कुमार दूसरे स्थान पर रहे, महिला वर्ग में कोमल सिंह पहले व दीपशिखा दूसरे स्थान रहीं। कुलपति और कुलसचिव ब्रिगेड के म्यूजिकल चेयर मैच के पुरुष वर्ग में कर्मचारी वर्ग से संतोष कुमार मौर्य जबकि कुलपति ब्रिगेड से ओमेश कुमार पंडित दूसरे स्थान पर रहे। महिला वर्ग में कुलपति ब्रिगेड से प्रो0 नीलम पाठक ने पहला और कुलसचिव ब्रिगेड से कृतिका निषाद ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। कैरम प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर छात्र वर्ग में बीटेक के ओम शंकर, द्वितीय स्थान पर एमबीए के देवेन्द्र प्रताप सिंह रहे। छात्रा वर्ग में प्रथम स्थान फिजिक्स की शिवा को द्वितीय स्थान पर एमसीजे की हिमांशी सिंह रहीं।

शतरंज खेल प्रतियोगिता के महिला वर्ग में कुलपति ब्रिगेड से डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव विजेता रही और कुलसचिव ब्रिगेड से निहारिका उपविजेता रही। वही पुरुष वर्ग में कुलपति ब्रिगेड से प्रिंस पोद्दार ने कुलसचिव ब्रिगेड डॉ0 श्रीश अस्थाना को दूसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। शतरंज खेल प्रतियोगिता के छात्र वर्ग में प्रथम स्थान एमसीए के जितेन्द्र कुमार पटेल, द्वितीय स्थान पर बीटेक के हिमांशु कसौधन रहे। छात्रा वर्ग में एमए अंग्रेजी की सोनम जायसवाल प्रथम स्थान, बीएससी की आराधना द्वितीय स्थान पर रही। बैडमिंटन प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में कुलसचिव ब्रिगेड से आनंद मौर्य, कुलपति ब्रिगेड से डॉ0 राणा रोहित सिंह विजयी रहे। बैडमिंटन प्रतियोगिता के डबल में कुलपति ब्रिगेड से प्रो0 शैलेंद्र कुमार वर्मा और डॉ0 राणा रोहित सिंह ने कुलसचिव ब्रिगेड राजेश सिंह और आनंद मौर्य को हराया। महिला वर्ग में कुलसचिव ब्रिगेड से वल्लभी तिवारी ने प्रथम स्थान, कुलपति ब्रिगेड से आस्था कुशवाहा दूसरे स्थान पर रहीं। महिला वर्ग में कुलपति ब्रिगेड की डॉ0 नीलम यादव और डॉ0 शशिकला सिंह की जोड़ी ने कुलसचिव ब्रिगेड की नीलम मिश्रा और श्रद्धा पांडेय को हराया। बालक वर्ग में आईईटी से जतिन कुमार चौरसिया प्रथम स्थान और आदित्य कुमार दूसरे स्थान पर रहे। बैडमिंटन बालिका वर्ग में अंजू को प्रथम और दीप्ति को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। शूटिंग में महिला वर्ग में कुलपति ब्रिगेड से माइक्रोबायोलॉजी विभाग की प्रो0 तुहिना वर्मा प्रथम स्थान, कुलसचिव ब्रिगेड से एकता दूसरे स्थान पर रही। पुरुष वर्ग में कुलपति ब्रिगेड से दीपक कुमार खरे पहले और कुलसचिव ब्रिगेड से राम निवास गौड़ दूसरे स्थान पर रहे। छात्र वर्ग में पीयूष कुमार सिंह पहले और अविश श्रीवास्तव दूसरे स्थान पर रहे। छात्रा वर्ग में अरीबा खान पहले तो जया सिंह दूसरे स्थान पर रही। टेबल–टेनिस प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में प्रथम स्थान कुलसचिव ब्रिगेड से वीरेंद्र, उपविजेता कुलपति ब्रिगेड से डॉ0 संग्राम सिंह रहे, वहीं महिला वर्ग में कुलपति ब्रिगेड से प्रथम स्थान डॉ0 शिवी श्रीवास्तव व उपविजेता कुलसचिव ब्रिगेड से अनामिका सिंह रही, दूसरी ओर टेबल टेनिस डबल में पुरुष वर्ग में कुलपति ब्रिगेड के मुरली मनोहर शर्मा और डॉ0 निखिल उपाध्याय विजेता रहे।

कुलसचिव ब्रिगेड के आशीष जायसवाल और सागर त्रिपाठी उपविजेता रहे। कबड्डी खेल प्रतियोगिता में कुलसचिव ब्रिगेड ने कुलपति ब्रिगेड पर जीत दर्ज किया। बालक वर्ग के कबड्डी खेल में शारीरिक शिक्षा संस्थान के खिलाडियों ने आईईटी संस्थान को 25–24 से हराकर विजय हासिल की। बालिका वर्ग के कबड्डी खेल में शारीरिक शिक्षा संस्थान की टीम फिजिक्स एवं इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग को 26–05 से हराकर विजेता बनी। पुरुष वर्ग में कुलसचिव ब्रिगेड ने कुलपति ब्रिगेड को 2–1 से हराया, वहीं महिला वर्ग में भी कुलसचिव ब्रिगेड ने कुलपति ब्रिगेड को 2–1 से हराया। बालक वर्ग के रस्साकशी खेल में शारीरिक शिक्षा संस्थान के खिलाडियों ने एमसीजे विभाग को 2–0 से हराकर विजय हासिल की।

नई शिक्षा नीति में समाहित है स्वावलंबी भारत की पहचानः राज्यमंत्री

20 जनवरी । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में नई शिक्षा नीति पर दो दिवसीय कार्यशाला का समापन हुआ। समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि नीलिमा कटियार, राज्य मंत्री उच्च शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी उत्तर प्रदेश ने कहा कि आज देश समग्रता के साथ आगे बढ़ रहा है। देश के वर्तमान, भविष्य सभी को मिलकर अच्छा बनाना है। किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था उस देश के विद्यार्थियों को देखकर पता चल सकती है। उन्होंने बताया कि हम दुनियां की सबसे समृद्ध शिक्षा व्यवस्था के आदर्शों पर चलने जा रहे है। जिस प्रकार प्राचीन काल में शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा एक साथ ग्रहण की जाती थी, उसी प्रकार नई शिक्षा नीति में कई शिक्षा पद्धति को एक साथ लाया गया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विवि के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि आत्मनिर्भर देश के लिए नई शिक्षा नीति का अनुसरण करना होगा। समाज के सभी तबको को नई शिक्षा नीति के विविध पहलुओं से परिचित कराने के लिए शिक्षकों एवं छात्रों की भूमिका बढ़ गई है। विश्वविद्यालय ने इसे लागू कराने के लिए पूरी तैयारी कर ली है, शीघ्र ही इसके सुखद परिणाम दिखाई देंगे। कार्यक्रम के पहले दिन उद्घाटन सत्र में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के प्रो0 पी0वी0 राजीव एवं प्रो0 आर0एस0 मिश्र ने संबोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन मनीषा यादव ने किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ0 तरुण गंगवार ने अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ0 मुकेश वर्मा, नितेश दीक्षित, राजीव कुमार, आशीष पाण्डेय, श्वेता मिश्र, डॉ0 महिमा चौरसिया का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 अशोक कुमार शुक्ल, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ0 महेन्द्र सिंह, चंदन अरोड़ा, प्रवीण मिश्र, नवीन पटेल सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें।

दीनदयाल का पूरा जीवन राष्ट्र को समर्पित रहाः डॉ0 मिश्र

11 फरवरी। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जीवन एवं व्यक्तित्व विषय पर विचार गोष्ठी एवं उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। विचार गोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ0 अनिल कुमार मिश्र, ट्रस्टी राम मंदिर तीर्थ क्षेत्र, अयोध्या रहे। डॉ0 मिश्र ने कहा कि पंडित दीनदयाल महान व्यक्तित्व के धनी थे। राजनीति में राष्ट्रवाद की भावना विकसित करना उनका ध्येय था। पंडित दीनदयाल के सिद्धांत के आधार पर ही अंत्योदय तक का समाधान निहित है। उनका मानना था कि समाजवाद का उदय करने के लिए सभी को समान समझना होगा। पंडित दीनदयाल का व्यक्तित्व सरल था। दूसरे के प्रति सम्माननीय व्यवहार करते थे। वे राजनीतिक जगत की अनूठी मिसाल थे। पं0 दीनदयाल का पूरा जीवन राष्ट्र को समर्पित रहा।

विचार गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में पंडित दीनदयाल शोध पीठ की स्थापना सौभाग्य का विषय है। पंडित दीनदयाल की विचारधारा सर्व कल्याण की थी। उन्होंने उच्च से लेकर अंतिम व्यक्ति के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। समाज की एकजुटता और एकता के लिए प्रतिबद्ध थे। दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ के समन्वयक प्रो0 आशुतोष सिन्हा ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि पंडित दीनदयाल का व्यक्तित्व संघर्षपूर्ण रहा। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने दीनदयाल के विषय में कहा था कि वे समस्याओं के निदान करने में पारंगत थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं शिक्षकों द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया गया।

भारतीय सेना से देश की सीमाएं चहुओर सुरक्षितः कुलपति

16 जनवरी। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में आर्मी बैंड शो का आयोजन किया गया। शौर्य गाथा के इतिहास से समृद्ध इस बैंड की स्थापना 1956 में लखवीर सिंह द्वारा मेरठ में की गई थी। राष्ट्रीय धुनों की प्रमुख प्रस्तुति में टीम का नेतृत्व कर रहे सुबेदार मोतीलाल ने वंदेमातरम्, ए वतन तेरे लिए, देव शिवा वर मोहे, केसरी एवं संदेशे आते है, सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा जैसी राष्ट्रीय गीत की धुनों पर शानदार प्रस्तुति दी। हवलदार अमर सिंह द्वारा राग भोपाली एवं कदम–कदम बढ़ाये जा की मनमोहक प्रस्तुति दी। हवलदार सुरजीत सिंह द्वारा सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है एवं ताकत वतन की हमसे है गीत की धुन प्रस्तुत कर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।

कार्यक्रम के अध्यक्षीय उद्बोधन में विवि के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने भारतीय सेना के अभूतपूर्व बलिदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय सेना से देश की सीमाएं चहुओर सुरक्षित है। भारतीय सेना के समर्पण एवं योगदान को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। कार्यक्रम में स्वागत करते हुए प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा कहा कि भारतीय सेना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।